विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

स्वास्थ्य ही अनमोल धन है

जीवन में स्वास्थ्य ही अनमोल धन है। शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रो में सफलता अर्जित कर सकते है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। व्यक्ति की सबसे बड़ी दौलत उसका शरीर और उसका स्वास्थ्य होता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए। आज हर व्यक्ति अच्छी सेहत की बात करता है और इसके प्रति काफी हद तक लोगों में जागरुकता भी आई है।

मगर आज भी अधिकांश व्यक्तियों के रोग का या तो समय पर पता नहीं चल पाता है या उसका सही तरह से उपचार नहीं हो पाता है, जिसके कारण हर साल पूरी दुनिया में करोड़ों लोगों की असमय ही मृत्यु हो जाती है। स्वस्थ जीवन का अधिकार हर मनुष्य को है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक आज भी दुनिया के 10 करोड़ लोग घोर गरीबी में जीते हैं और अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देते हैं। फलस्वरूप विभिन्न बीमारियों से घिरे रहते है और समय पर उपचार नहीं मिलने के कारण अंततोगत्वा अकाल मौत के शिकार हो जाते है।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निवास होता है। मन को कभी गंदा या खराब नहीं रखना चाहिए। मानव की सबसे बड़ी दौलत उसका शरीर और उसका स्वास्थ्य होता है। अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए कई चीजों की आवश्यकता होती है। इनमें ताजी हवा, स्वच्छ पानी, उचित धूप, संतुलित आहार, जंक फूड से दूर, स्वच्छ, स्वस्थ और हरियाली का वातावरण, सुबह की सैर, व्यक्तिगत स्वच्छता, उचित शिक्षा आदि की आवश्यकता होती है।

शारीरिक रूप से सक्रिय रहने से तनाव, अवसाद और दर्द को कम करके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। नियमित व्यायाम उच्च रक्तचाप, शुगर और गठिया सहित अनेक व्याधियों को रोकने में मदद करता है। सेहत को बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम के साथ शरीर को गुणवत्ता वाले कार्बोहाइड्रेट, बिना चर्बी वाला प्रोटीन, आवश्यक वसा और तरल पदार्थों की आवश्यकता होती है।

अच्छा स्वास्थ्य तनाव के स्तर को कम करता है और बिना किसी कष्ट के स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देता है। हमें हमेशा अपने स्वास्थ्य के बारे में पता होना चाहिए और नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए जाना चाहिए। हमें अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए समय पर ताजे फल, सलाद, हरी पत्तेदार सब्जियां, दूध, दही और छाछ आदि का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए।

भारत में आम तौर पर लोगों में स्वास्थ्य चेतना का अभाव है। शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति भी लोग तभी चिंतित होते हैं जब कोई रोग उन्हें घेर लेता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि निष्क्रियता कई गंभीर बीमारियों को जन्म देती है। विश्व लगातार बढ़ रही निष्क्रियता नामक महामारी का शिकार हो रहा है आरामदेह जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ, जैसे हृदय रोग और डायबीटीज, अब तक संपन्न देशों की बीमारियाँ मानी जाती थीं लेकिन अब विकासशील देश भी अब इसके शिकार हो रहे हैं। विश्व भर में इन बीमारियों से हर वर्ष दो करोड़ लोगों की मौत होती है और इनमें से अस्सी प्रतिशत गरीब देशों से हैं। इस तरह की बीमारियाँ दौड़-भाग से रोकी जा सकती हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि विश्व के पचासी प्रतिशत लोग निष्क्रिय जीवनशैली बिता रहे हैं और विश्व के दो-तिहाई बच्चे भी पूरी तरह से सक्रिय नहीं हैं और इससे उनके भविष्य पर भी बुरा असर पड़ेगा।

संगठन का कहना है कि साधारण व्यायाम जैसे पैदल चलना, नृत्य करना और यहाँ तक की सीढ़ियाँ चढ़ना भी सेहत को ठीक रख सकता है। शोध बताते हैं कि खानपान में साधारण परिवर्तन और हल्के व्यायामों से आंतों के कैंसर के खतरे को सत्तर प्रतिशत और डायबिटीज को साठ प्रतिशत कम किया जा सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होना ही मानव स्वास्थ्य की परिभाषा है। भारत ने पिछले कुछ सालों में तेजी के साथ आर्थिक विकास किया है, लेकिन इस विकास के बावजूद बड़ी संख्या में लोग कुपोषण के शिकार हैं जो भारत के स्वास्थ्य के प्रति चिंता उत्पन्न करता है।

स्वास्थ्य सिर्फ रोग या दुर्बलता की अनुपस्थिति ही नहीं बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खुशहाली की स्थिति है। स्वस्थ लोग रोजमर्रा की गतिविधियों से निपटने के लिए और किसी भी परिवेश के मुताबिक अपना अनुकूलन करने में सक्षम होते हैं। रोग की अनुपस्थिति एक वांछनीय स्थिति है लेकिन यह स्वास्थ्य को पूर्णतया परिभाषित नहीं करता है। यह स्वास्थ्य के लिए एक कसौटी नहीं है और इसे अकेले स्वास्थ्य निर्माण के लिए पर्याप्त भी नहीं माना जा सकता है। लेकिन स्वस्थ होने का वास्तविक अर्थ अपने आप पर ध्यान केंद्रित करते हुए जीवन जीने के स्वस्थ तरीकों को अपनाया जाना है। रोज़ 8 घंटे की नींद आपको तरोताजा महसूस कराती है, दिल की स्थिति का जोखिम कम करती है, आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को बनाए रखने में मदद करती है और आपकी याददाश्त को भी मजबूत करती है।

शारीरिक रूप से सक्रिय रहने से तनाव, अवसाद और दर्द को कम करके मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। नियमित व्यायाम उच्च रक्तचाप, शुगर और गठिया सहित अनेक व्याधियों को रोकने में मदद करता है।

सेहत को बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम के साथ शरीर को गुणवत्ता वाले कार्बोहाइड्रेट, बिना चर्बी वाला प्रोटीन, आवश्यक वसा और तरल पदार्थों की आवश्यकता होती है। हमें अपनी भागदौड़ की ज़िंदगी में से कुछ समय अपने स्वास्थ्य की देखरेख के लिए निकालना होगा तभी हम अपनी सेहत को पुष्ट कर सकेंगे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी की ऐतिहासिकता

डॉ. चन्द्रमणि सिंह व श्री सुरेन्द्र बोथरा द्वारा लिखित पुस्तक 'पद्मिनी' सम्भवत: पद्मिनी की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में सबसे प्रमाणिक पुस्तक है।

पद्मिनी की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतभेद है। जब पद्मिनी फिल्म बनी (जिसका बाद में नाम पद्मावत हो गया) तब यह मतभेद और उभर कर आ गये। एक वर्ग विशेष भी उस विवाद में खुलकर सामने आ गया। उस विषम परिस्थिति में भारत के फिल्म सेंसर बोर्ड ने तीन विशेषज्ञों की एक कमेटी गठित की जिसमें श्री जी अरविन्द सिंह मेवाड़ जो मेवाड़ के राजपरिवार के हैं, विख्यात कला व इतिहास की विशेषज्ञ डॉ. चन्द्रमणि सिंह व प्रमुख इतिहासकार प्रो. कपिल कुमार थे। कमेटी की राय पर भारतीय सेंसर बोर्ड ने पद्मिनी फिल्म का नाम बदलकर पद्मावत कर दिया और इसी बदले हुए नाम से यह फिल्म रिलीज हुई।

इस पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए डॉ. चन्द्रमणि सिंह को पद्मिनी की ऐतिहासिकता के सम्बन्ध में बहुत अध्ययन करना पड़ा जिसके आधार पर वर्तमान पुस्तक की रचना हुई है। श्री सुरेन्द्र बोथरा जो जैन शास्त्रों के एक प्रमुख विद्वान है उनके सहयोगी बने।

यह वह समय था जब श्रुत परम्पराओं के आधार पर लिखित राजस्थान के इतिहास के उक्त प्रश्न पद्मिनी की ऐतिहासिकता को सुलझाने के लिए एक के बाद एक प्रश्न किया गया और प्रश्न था कि सुलझने की जगह उलझता ही चला गया। इसका प्रमुख कारण था–चित्तौड़ उजड था, ऐतिहासिक साहित्य नष्ट हो चुका था, रावल वंश की शाखा तो समाप्त हो गई थी। वीर हम्मीर ने धीरे-धीरे चित्तौड के गौरवशाली अतीत का निर्माण किया और शीघ्र ही महाराणा कुम्भा के समय में वंशावली तैयार की गई। एकलिंग माहात्म्य में भी ऐतिहासिक सामग्री संकलित की गई। अलाउद्दीन के हमले के दौरान जो तोड-फोड हुई, उसके टुकडों को इकट्ठा करके इतिहास लिखा गया। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है रावल रत्नसेन का शिलालेख जो म.म. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा जी को मिला और इसी समकालीन आधार पर उनकी प्रामाणिकता तय हुई। यह शिलालेख 1926 में मिला सो 14वीं शती से 20वीं शती के पूर्वार्द्ध तक इतिहासकारों की अटकलबाजियाँ ही चलती रही।

इतिहासकारों ने अपनी बात सही बताने का प्रयास करते हुए, कतिपय नई समस्याएँ खडी कर दीं। विशेषकर विदेशी इतिहासकार भारतीय इतिहास की संस्कृति और विभिन्न भाषाओं से बहुत परिचित नहीं थे। जहाँ-जहाँ वे लोग गए, वहां के लोगों से जो कुछ सुना उसे लिखते चले गये।

उत्तर पश्चिम से जो इतिहासकार आए, उन्होंने भी लिखा; उन दिनों दिल्ली उच्च शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र बन गया था। विदेशी आक्रांताओं के साथ बहुत से विद्वान तो आए ही साथ ही तकनीकी विशेषज्ञ भी आए। इन्हीं दिनों कागज भी आया।

13वीं शती में भारत में कागज का आगमन एक अभूतपूर्व घटना थी, इसके बाद यहां का श्रुत ज्ञान बड़े स्तर पर लिपिबद्ध किया गया। लिखने की परम्परा तो यहां बहुत पहले से चली आ रही थी, किन्तु उचित माध्यम नहीं होने के कारण लेखन की गति धीमी रही। राज्याज्ञाएं तो शिलापट्टों पर खुदवाई जाती थी, धार्मिक ग्रन्थ और सरकारी दस्तावेज आदि तालपत्रों और भुर्ज पत्रों पर लिखे जाते थे और कथा साहित्य तथा ऐतिहासिक घटनाओं से जुडी कहानियाँ श्रुत परम्परा में ही चलती रहीं।

अब कथा साहित्य का विशाल भण्डार भी लिपिबद्ध होने लगा। यह साहित्य भी जैन, बौद्ध और हिन्दू खेमों में बंटा हुआ था, आपस में आदान-प्रदान कम था और जो था वह भी सीमित। ये कहानियां भी एक जगह से दूसरी जगह पहुंचते-पहुंचते परिवर्तित हो जाती थी। कागज के सर्वसुलभ होने पर 13वीं-14वीं शती से एक जबरदस्त बदलाव आया।

17वीं शती में अंग्रेज एवं यूरोपीय लोग आए। पहले तो वे लोग यहां के इतिहास को अच्छी तरह नहीं समझते थे किन्तु धीरे-धीरे उनकी जानकारी बढ़ी। वे लोग यात्रा विवरण आदि तो लिखते रहे किन्तु राजस्थान के इतिहास को समझने का प्रयत्न सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने ही किया। उसे राजस्थान की संस्कृति से प्रेम था, उसने यहां की बोलियों की जानकारी प्राप्त की और पंडितों के माध्यम से राजस्थान की साहित्यिक एवं ऐतिहासिक सामग्री का संकलन भी किया। भारत प्रेम के कारण वह अपने सरकार में लोकप्रिय नहीं रहा, साथ ही अत्यधिक परिश्रम के कारण उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था, इस कारण से उसने नौकरी से अवकाश

प्रकाश भण्डारी

ले लिया और अपने देश जाकर दो खण्डों में 'एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' नामक विशद् ग्रन्थ तैयार किया। इसके बाद अंग्रेजी में राजस्थान पर जो कुछ लिखा गया, उसका आधार टॉड का राजस्थान ही है जो काफी कुछ प्रामाणिक है।

पद्मिनी की ऐतिहासिकता के लेखकों ने जनश्रुतियों, कथा साहित्य, उनमें छिपे इतिहास और लोक साहित्य को भी शामिल किया। नारायणदास की छिताई वार्त्ता बरसों से उपलब्ध थी। इसके नाम से ही स्पष्ट है कि यह पुस्तक 'बात' पर आधारित है और नारायण दास ने वात का ही शुद्ध रूप वार्त्ता दिया। जैनाचार्य कक्कसूरि की प्रसिद्ध कृति 'नाभिनंदन जिनोद्धार' भी लोगों की जानकारी में थी, जिसमें रत्नसेन का उल्लेख हुआ है। अमीर खुसरो ने चित्तौड युद्ध का वर्णन भी किया था, किन्तु इतिहासकारों ने उन्हें महत्त्व नहीं दिया। राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यकार भंवरलाल नाहटा ने अपनी पुस्तक 'पद्मिनी चरित्र चौपई' में गोरा बादल के कवित्त को संकलित किया। किन्तु रचना तिथि के अभाव में विद्वानों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। भाषा शास्त्र के आधार पर मुनि जिन विजयजी एवं भंवर लाल नाहटा ने इसे 14वीं शती की आरम्भ की रचना मानते है। राघव चेतन विषयक जानकारी भी थी किन्तु जैन साहित्य तक ही सीमित होने के कारण मुख्य धारा के इतिहासकारों ने इसे अनदेखा कर दिया। लोगों ने इन स्रोतों पर ध्यान न देकर, उनका विश्लेषण करते हुए प्रमाणित इतिहास के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, इतिहासकारों ने इसका उपयोग ही नहीं किया, यही तो कहा जाएगा।

इस पुस्तक का यही उद्देश्य है कि हेतमदान कवि मल्ल की रचना गोरा बादल की गाथा में वर्णित पद्मिनी की ऐतिहासिकता को सिद्ध करें। कवि स्वयं कहता है- 'गढ डीली अलावदी, चित्रकोट गहलउत। पद्मणि कारिज साधीयउ, कहसूं तेह चरित्र''।

पुस्तक की विशेषता यह है कि यथासम्भव पद्मिनी से सम्बन्धित सभी ऐतिहासिक ग्रन्थों का उपयोग किया गया। कवि व विद्वान अमीर खुसरो जो अलाउद्दीन खलजी के सभासद थे साथ में भी थे और चित्तौड की लडाई में स्वयं उपस्थित थे, की रचना खजाइन-अल-फुतुह का भी अध्ययन और उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त अबुल फ़जल (जो अकबर के इतिहासकार थे और आईन-ए-अकबरी और अकबरनामा के लेखक थे), तारीख-ए-फ़रिश्ता, कर्नल टॉड, वीर विनोद के लेखक श्यामल दास, म.म.गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, ए0सी0दत्त, प्रो0 कालिकारंजन कानूनगो, प्रो0 दशरथ शर्मा के उदाहरण दिये और उनके लेखन को परिशिष्ट में भी रखा। इसके अतिरिक्त सबसे प्रमुख उदाहरण दिया जो हेतमदान द्वारा रचित 'गोरा बादल कवित्त' से है। सम्भवत: इसका उपयोग पहली बार पद्मिनी के सम्बन्ध में हुआ। इसकी विशेषता यह है कि यह पद्मिनी के प्राय: कुछ ही दिनों बाद की रचना है। सम्बन्धित उदाहरण ऊपर आ चुका है-

''गढ़ डीली अलावदी, चित्र कोट गहलउत।
पद्मणि कारिज साधीयउ, कहसूं तेह चरित्र।''। 7।।

नारायण दास लिखित छिताई वार्ता में भी पद्मिनी का उल्लेख है यह ग्रंथ जायसी के पद्मावत से लगभग कई दशक पहले का है। जिससे स्पष्ट होता है कि पद्मिनी जायसी की कल्पना नहीं थी जैसा कई विद्वान गलत रूप से समझते हैं, इसका सम्बन्धित उदाहरण इस प्रकार है –

''यौं बोलै ढिल्ली कौ धनी, मैं चीतौर सुनी पद्मिनी।
बांध्यौ रतनसैनि मैं जाइ, लै गो बादिलु ताहि छिडाइ।। 32।।
जो अबके न छिताई लैउ, तौ निज सीसु देवगिरिहि दैउ।
इतनी बात कहै यौ साहि, क्या कीजै गढ़ देवगिरि ढाहि।।'' 322।।

ऐसे बिन्दुओं पर जनश्रुति को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता विशेष रूप से राजस्थान जैसे क्षेत्र में जहाँ जनश्रुति की लम्बी और पुरानी परम्परा रही है। जनश्रुति की परम्परा ऐसे लोगों में थी जो कई बार इतने स्पष्ट वक्ता थे कि अपने स्वयं के राजाओं को भी कड़वी बात कहने में नहीं हिचकते थे। वे सब केवल चाटूकार ही नहीं थे, जैसा कुछ इतिहासकार मानते हैं।

इन सभी ग्रन्थों के आधार पर और कुछ विपरीत विचारधारा वाले साहित्य पर भी मनन कर लेखकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पद्मिनी एक ऐतिहासिक वास्तविकता है। इस सम्बन्ध में कोई संशय नहीं हो सकता। पुस्तक की एक विशेषता यह भी है कि सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी की रचना पद्मावत के माध्यम से इस प्रेम एवं त्याग की कथा का जो चतुर्दिक प्रसार हुआ और विभिन्न भाषाओं में उसके अनुवाद हुए उनकी चर्चा भी इस पुस्तक में सम्मिलित की गई है। एक बार और, 18वीं शती से मुगल व राजपूत चित्र शैलियों में पद्मावत पर आधारित चित्र भी प्रकाशित किए गए ताकि पद्मिनी प्रसंग अपने में पूर्ण हो जाए।

पुस्तक का नाम –
चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी की ऐतिहासिकता लेखक –
डॉ. चन्द्रमणि सिंह, सुरेन्द्र बोथरा
प्रकाशक –
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर एवं राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर
– प्रकाश भण्डारी,
वरिष्ठ पत्रकार

अव्यवस्थित पार्किंग से आम जन व एम्बुलेंस चालक परेशान

सुजानगढ़ के बगडिया अस्पताल में बेतरतीब खड़े वाहन।

सुजानगढ़, (निसं)। राजकीय बगडिया उप जिला अस्पताल में पार्किंग व्यवस्था पूरी तरह से चरमराई हुई है। एक के बाद एक खडे चार पहिया वाहनों के चलते एम्बूलेंस आगे नहीं आ पाती है, जिसके चलते रैफर होने वाले मरीजों को परेशान होना पड रहा है। हुआ यूं कि शुक्रवार सुबह एक मरीज को ले जाने के लिए चिरंजीवी योजना के तहत आई 108 एम्बूलेंस अस्पताल आई, लेकिन अस्पताल परिसर में गैस एजेन्सी की गाडी, कैन से पानी की सप्लाई देने वाली गाडी एवं अन्य गाडिया खडी होने के चलते एम्बूलेंस को आगे बढने के लिए जगह नहीं मिली जिसके चलते चालक को एम्बूलेंस को मरीज से दूर खडा करने के लिए मजबूर होना पडा। बाद में मरीज के परिजनों ने उसे व्हील चेयर से एम्बूलेंस में पंहूचाया। उसके बाद एम्बूलेंस अपने गंतव्य के लिए रवाना हो सकी। इस दौरान एम्बूलेंस चालक ने पार्किंग में लगे हुए युवक को इस अव्यवस्था के लिए ओळमा भी दिया। अव्यवस्थित पार्किंग को लेकर पहले भी शिकायत हुई है।

गौवंश संरक्षण के नाम पर स्टाम्पों पर वसूल रहे अतिरिक्त कर

चूरू, (कासं)। गौवंश संरक्षण के नाम पर स्टाम्पों पर अतिरिक्त कर वसूल रहे हैं, इधर गोवंश सड़कों पर डोल रहा है। चूरू जिला मुख्यालय पर तो आवारा पशुओं के कारण सड़कों पर चलना बहुत ही मुश्किल काम हो गया है। यहां प्रशासन द्वारा कोई समाधान भी नहीं किया जा रहा है। जबकि यहां आवारा सांड कई लोगों की जान भी ले चुके हैं। घायलों की तो कोई गिनती ही नहीं है।

मिली जानकारी के अनुसार चूरू शहर में आवारा पशुओं की बढ़ती तादाद से लोगों की परेशानी दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। लेकिन उनकी इस पीड़ा को ना तो कोई सुनने वाला है और ना ही इस समस्या का स्थाई समाधान करने वाला दिख रहा है। नेता या अधिकारी लोग मौका मिलने पर भाषण जरूर दे देते हैं। ज्यादा से ज्यादा मृतक के घर जाकर अथवा पत्र लिखकर संवेदना व्यक्त कर देते हैं। इससे अधिक कुछ नहीं कर रहे हैं। चूरू शहर के बुजुर्ग व्यक्तियों ने बताया कि आवारा सांडों की समस्या लंबे समय से चली आ रही है। इसका स्थाई समाधान होना चाहिए। बुजुर्ग लोग तो सुबह-शाम टहलने में भी डरने लगे हैं। गौरतलब है कि जिला मुख्यालय की सब्जी मंडी, पुराना बस स्टेण्ड, भरतिया कुवे के पास, रेलवे स्टेशन के पास, धर्म स्तूप के पास, पंखा सर्किल सहित विभिन्न स्थानों पर आवारा सांड़ कई लोगों पर हमला कर चुके हैं।

शहर की मुख्य सड़कों पर कभी भी आवारा सांडों को लड़ते हुए देखा जा सकता है। इस कारण से दुपहिया वाहन चालक भी काफी परेशान हैं। इससे यहां चूरू नगरपरिषद के साथ-साथ जिला प्रशासन की भी अनदेखी साफ दिखाई दे रही है। यहां किसी को भी आमजन की जान की कोई परवाह नहीं है। शहर के लोग दर्जनों बार नगरपरिषद व जिला प्रशासन से समस्या का समाधान करवाने के लिए गुहार लगा चुके हैं। कोई ध्यान ही नहीं दे रहा है।

राजस्थान सरकार द्वारा पिछले भाजपा शासन काल के समय से गोवंश संरक्षण के नाम पर स्टाम्पों पर अतिरिक्त कर वसूल किए जा रहे हैं लेकिन गौ संरक्षण के नाम पर कुछ नहीं किया जा रहा है। इतना ही नहीं विभिन्न गोशालाएं आवारा व बुजुर्ग गोवंशों को संरक्षण के नाम पर सरकार से लाखों रुपये ले रही हैं। उसके बाद भी आवारा गोवंश आमजन के लिए जी का जंजाल बना हुआ है। साथ ही गोवंश शहर की सड़कों पर पोलिथिन खाने को मजबूर हो रहे हैं।

राशिफल शनिवार 19 फरवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2078, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र सांय 4:51 तक, धृति योग सांय 4:36 तक, वणिज करण दिन 10:13 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज यमघट योग सांय 4:51 से सूर्योदय तक है। भद्रा दिन 10:13 से रात्रि 4:57 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:18 से 9:53 तक, चर 12:41 से 2:05 तक, लाभ-अमृत 2:05 से 4:33 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:50 तक। सूर्योदय 7:04, सूर्यास्त 6:17

मेष
परिवार में चल रही स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

वृष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मिथुन
परिवार में अतिथियों के आगमन से भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। शुभ कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय है। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

जलदाय विभाग की लापरवाही के चलते चौरु में दो दिन से पेयजल व्यवस्था ठप

उनियारा/चौरु, (निसं)। जलदाय विभाग के उच्चाधिकारियों की घोर अनदेखी, लापरवाही, उदासीनता एवं ठेकेदार की मनमानी के चलते हुए चौरु कस्बें की पेयजल व्यवस्था 2 दिन से ठप पड़ी हुई है। इस कारण कस्बे वासी बूंद-बूंद पानी के लिए तरसने को मजबूर बने हुए है।

इतना होने के बावजूद भी विभागीय अधिकारी तथा ठेकेदार समस्या का समाधान करने के बजाय मूकदर्शक बने हुए है। इससे पेयजल समस्याएं गंभीर रुप से जटिल बनी हुई हैं। जानकारी के अनुसार चौरू कस्बे में जलदाय विभाग द्वारा कस्बे की पेयजल व्यवस्था के लिए करीब सात माह से कस्बे के ही एक युवक चेतन बैरवा को पांच हजार रुपए प्रति माह के वेतन पर लगा रखा था। ताकि कस्बे की पेयजल व्यवस्था सुचारू रूप से बनी रहे और लोगों को समय पर पेयजल उपलब्ध हो सके। समय पर वेतन नहीं मिलने के कारण चेतन बैरवा ने पेयजल व्यवस्था को बंद कर दिया है। इससे कस्बे वासियों के सामने विकट जल समस्याएं खड़ी हो गई हैं। कस्बे में दो दिन से पेयजल नहीं मिलने के कारण लोगों की दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई है एवं गर्मी की शुरुआत के साथ ही लोगों को पेयजल के लिए 2 दिन से दर-दर भटकना पड़ रहा है। वहीं पेयजल संकट के कारण महिलाओं को दिनभर तथा देर रात तक नलों से पानी आने का इंतजार रहता है।

इस संबंध में जलदाय विभाग के कनिष्ठ अभियंता हरकेश मीना का कहना है कि चेतन बैरवा का बकाया वेतन में से कुछ भुगतान मंगलवार को करवा देंगे और बाकी वेतन कब तक होगा बता देंगे? मैं पेयजल आपूर्ति की जानकारी लेता हूँ।

पेयजल अव्यवस्था के कारण कस्बे वासी बूंद-बूंद पानी के लिए तरसने को मजबूर बने हुए हैं।